श्री राम चन्द्र मिशन®
एकोस इंडिया

सितम्बर २००८ केवल वैयक्तिक परिचालन के लिये वोल्यूम–१ अंक–५

प्यारे भाईयों और बहनों

हम सब पूज्य गुरुदेव के लखनऊ में मनाये गये जन्मोत्सव के मधुर संस्मरण और उनके आशीर्वाद की अविरल धारा के प्रवाह को अब तक महसूस कर रहे हैं जिसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। इस संस्करण की मुख्य झलकियां हैं – भंडारे की एक अलग से रिपोर्ट, पूज्य मालिक की विभिन्न केंद्रों की यात्रा, मेरठ आश्रम का उद्घाटन, प्रशिक्षण कार्यक्रमों तथा ओपन हाऊस सत्रों का आयोजन।

देश भर के केन्द्रों और आश्रमों में संयुक्त राष्ट्र और श्री राम चन्द्र मिशन के संयुक्त तत्त्वाधान में एक निबंध–लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है।

नवम्बर संस्करण के लिये संस्मरण भेजने की अंतिम तिथि 10 अक्तूबर 2008 है। कृपया अपने संस्मरण घटना की तस्वीरों के साथ अपने ज़ोनल प्रभारी के माध्यम से भेजें।

एकोज़ इंडिया न्यूज़लेटर टीम

पूज्य गुरुदेव का 81वां जन्मदिवस समारोह – लखनऊ

20 जुलाई को पूज्य गुरुदेव के विमान द्वारा कोलकता से लखनऊ पहुँचते ही वहाँ उत्सव का माहौल लगने लगा। पूरे विश्व भर से लगभग 42,000 अभ्यासी व बच्चे लखनऊ आश्रम में एकत्रित हुए। आश्रम, लखनऊ शहर से 25 कि.मी. दूर हरदोई बाईपास पर आई. आई. एम. कैम्पस के पास स्थित है।

23 जुलाई को संयुक्त राष्ट्र संस्था (UN), नई दिल्ली के श्री राजीव चन्द्रन ने वहाँ एकत्रित लोगों को सम्बोधित करते हुए बताया कि संयुक्त राष्ट्र शांति, अक्षोभ, समानता तथा सुविधा वंचित लोगों; विषेशतः औरतों को समर्थ करने जैसे मूल्यों को बहाल करने के लिये मिलेनियम डिवेलपमेंट गोल्ज़ (UNMDG) के अन्तर्गत क्या क्या कोशिशें कर रही है।

उसके पश्चात एक यादगार वार्ता में मालिक ने यह बतलाया कि श्री राम चन्द्र मिशन किस प्रकार जात–पात, धर्म, भाषा व राष्ट्रीयता जैसे अवरोधों के रहते, लोगों में भाई–चारे की भावना ला रहा है। अब तक मिशन में 2,000 विवाह सम्पन्न हो चुके हैं तथा इससे नई मानवता को उजागर करने का रास्ता बनेगा।

मालिक ने ज़ोर देकर कहा कि औरतों को अधिकार केवल प्रेम से ही मिल सकता है। उन्होंने कहा, "उन्हें प्यार करो, दुलार करो और उनकी रक्षा करो।" उन्होंने बतलाया कि भारत में औरतें अपने घर की रानियां रही है चाहे वे पब्लिक में अपने पति से कुछ कदम पीछे चलती हैं।

24 जुलाई का आरम्भ पूज्य गुरुदेव के ध्यान–कक्ष में पहुँचते ही जन्मदिवस गीत की धुन बजाने से किया गया। सत्संग के बाद मालिक ने 11 शादियां सम्पन्न कीं। उसके बाद भजन, भक्तिपूर्ण गीतों तथा कविताओं से हृदय मालिक के प्रति प्रेम से ओत–प्रोत हो गया।

ध्यान–कक्ष के पृष्ठपट का विषय था "हमेशा के लिये साथ"(Together Forever) जिसके साथ में पूजनीय बाबू जी महाराज और चारी जी की फ़ोटो भी थीं। इस तीन–दिवसीय समारोह में 36 विवाह सम्पन्न हुए, जिनमें 9 जोड़े विदेशी थे। समारोह के दौरान मालिक ने कई नई पुस्तकें, सी डी व डी वी डी जारी कीं। 'ही द हुक्का एन्ड आई' के अनुक्रम मे मालिक द्वारा दी गई वार्ताओ का 5 डी वी डी का संग्रह द हबल– बबल का भी विमोचन किया गया।

मानसून के कारण सभी बाड़े (तेंट) जलरोधक बनाये गये थे जिसकी वजह से बारिश के बावजूद अभ्यासियों ने सब जगह सुरक्षित महसूस किया। मालिक ने आयोजकों एवं वालंटियरज़ के काम की सराहना की जिन्होंने दिन–रात काम करके इस समारोह को सम्भव बनाया। वालंटियरज़ ने अलग–अलग अनुभाग(विभाग) जैसे आवास, सुरक्षा, यातायात, जूतों का प्रबंधन, आरोग्य, (मेडिकल), मैरिज डेस्क, जलपान–गृह, रसोई, सहायता, जल–आपूर्ति, हाऊस कीपिंग तथा बच्चों का केंद्र इत्यादि सभी विभागों को सम्भाला। बैंक और इंटरनेट की सुविधा भी उपलब्ध करवाई गई।

मालिक, आगुंतकों से मिलने और विश्व भर से आये मिशन के कार्यकर्त्ताओं के साथ मिशन के संचालन की समीक्षा करने में व्यस्त रहे। उन्होंने मिशन की कार्यकारी समिति के साथ मिशन की गतिविधियों तथा भविष्य में किये जाने वाले कार्यों की समीक्षा की।

25 जुलाई 2008 को मालिक ने सुबह सत्संग करवाया जिसके बाद अभ्यासियों द्वारा भक्तिपूर्ण गीत प्रस्तुत किये गये। फ़िर मिशन के सचिव भाई यू. एस. बाजपेयी ने सभी को संबोधित करते हुए औपचारिक रूप से समारोह का समापन किया।

एस.आर.सी.एम

एकोस इंडिया

सितम्बर २००८ केवल वैयक्तिक परिचालन के लिये वोल्यूम–१ अंक–५

मालिक की यात्रा जून–अगस्त 2008

बेंगलूर

मालिक यूरोप की दो मास लंबी यात्रा के बाद दुबई से रविवार, 15 जून 2008 को बेंगलूर पहुँचे। बेंगलूर व आस–पास के केन्द्रों से बहुत से अभ्यासी मालिक का स्वागत करने के लिये नये अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर एकत्रित हुए।

मालिक ने निर्माणाधीन लालाजी निलयम ध्यान केन्द्र (जिसका नया नाम उन्होंने परम– धाम रखने का फ़ैसला किया है) में सत्संग करवाया तथा विवाह सम्पन्न करवाये। फ़िर उन्होंने बेंगलूर के पूर्व, दक्षिण व उत्तर दिशा में उन क्षेत्रों के अभ्यासियों के लिये बनाये गये तीन आश्रमों के बारे में कहा। एक लघु वार्ता में उन्होंने स्वः अनुशासन की ज़रूरत के बारे में बतलाया। मालिक ने नये डी वी डी सेट "ही, द हुक्का एंड आई – सेट 2 : द हबल बबल" का परिचय दिया।

मालिक 20–26 जून तक क्रेस्ट में रहे। कर्नाटक के विभिन्न केंद्रों से अभ्यासी मालिक से मिलने वहाँ आते रहे। मालिक ने एस एम एस एफ़ पुस्तकालय उपभोक्ता कार्ड का उद्घाटन किया जिसे एस एम एस एफ़ के किसी भी पुस्तकालय में उपयोग किया जा सकता है। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि इन पुस्तकालयों के लिये चयनित पुस्तकों का उद्देश्य धर्म और आध्यात्मिकता की विस्तृत जानकारी लेना व उनको समझना है।

मालिक ने फ्रांस से लाई गई 200 किलो की घंटी को क्रेस्ट में संस्थापित करने के कार्य में पूरी दिलचस्पी दिखाई और प्रसन्नचित इसका उद्घाटन किया। 28 जून को मालिक सड़क मार्ग द्वारा नाट्टमपल्ली रवाना हो गये। एक रात वहाँ रुकने के बाद उन्होंने चेन्नई के लिये प्रस्थान किया।

मालिक ढाई महीनों के बाद चेन्नई गये। जहाँ बहुत से अभ्यासियों ने उनका हार्दिक अभिनंदन किया। यात्रा की थकान के बावजूद कॉटेज में पहुँचते ही मालिक ने अभ्यासियों के साथ वक्त बिताया।

6 जुलाई को सुबह के सत्संग के बाद मालिक ने "ही, द हुक्का एंड आई" का तमिल अनुवाद जारी किया। अभ्यासियों से मिलने का समय वे हमेशा निकाल लेते। मालिक, लालाजी मेमोरियल ओमेगा इंटरनेश्नल स्कूल भी गये। उन्होंने कक्षा 10 के विद्यार्थियों से अच्छे से पढ़ाई करने का तकाज़ा किया और कहा यह स्कूल से पास होकर निकलने वाला प्रथम बैच होगा।

▲ Bangalore

▲ Naukuchiatal

▲ Chennai

▲ Satkhol

▲ Shahjahanpur

▲ Satkhol

▲ Ghaziabad

मालिक 14 जुलाई को कोलकता के लिये रवाना हुए। जहाँ पर देश भर से अभ्यासी 18 जुलाई को, गुरुपूर्णिमा के अवसर पर मालिक का सानिध्य पाने के लिये एकत्रित हुये। वहाँ से 20 जुलाई को मालिक लखनऊ समारोह के लिये रवाना हुए।

लखनऊ समारोह के बाद 28 जुलाई को सड़क मार्ग द्वारा शाहजहाँपुर पहुँचे। वहाँ वे बाबूजी के मकान में गये और वहाँ एकत्रित अभ्यासियों को सत्संग कराया। फ़िर वे आश्रम गये और वहाँ उपस्थित अभ्यासियों को सत्संग कराया। दोपहर को रुद्रपुर रवाना होने से पहले मालिक कुछ समय अभ्यासियों के साथ रहे।

मालिक 29 जुलाई को दोपहर बाद 3.30 बजे सतकोल पहुँचे। रास्ते में वे कुछ समय के लिये नौकुचियाताल रुके।

30 तारीख को मालिक ने सुबह का सत्संग करवाया तथा एक अभ्यासी भाई द्वारा गाये गये मधुर गीत का आनंद लिया। सतकोल से मालिक रुद्रपुर और मुरादाबाद होते हुए मेरठ चले गये।

एस.आर.सी.एम

एकोस इंडिया

सितम्बर २००८ केवल वैयक्तिक परिचालन के लिये वोल्यूम–१ अंक–५

मालिक द्वारा मेरठ आश्रम का उद्घाटन

सतकोल से दिल्ली जाते हुए मालिक 1 अगस्त 2008 को कुछ अभ्यासियों के साथ, मेरठ केन्द्र गये । रास्ते में मुरादाबाद में उन्होंने नाश्ता किया । फ़िर वे मेरठ आश्रम स्थल पर पहुँचे, जहाँ नया ध्यान–कक्ष और मालिक की कॉटेज उनके द्वारा उद्घाटन के लिये तैयार थे । रिबन काटने के बाद मालिक ने अभिषेक पट्टी से पर्दा उठाया और नया आश्रम पूजनीय बाबूजी महाराज को समर्पित किया । मालिक ने वहाँ उपस्थित अभ्यासियों को सत्संग कराया । मालिक ने कहा कि रावण की पत्नी मंदोदरी भी मेरठ की रहने वाली थी, लेकिन एक असुर के परिवार में रहते हुए भी वह एक नेक औरत थी । अपनी वार्ता में मालिक ने कहा :

–हमें एकांत बनाये रखने का संकल्प लेना चाहिये जिससे झगड़े भी कम होंगे ।
–अंदर या बाहर का निर्माण करें – दोनों का सम्भव नहीं है ।
–हम कम से कम यह तय कर लें कि हमें क्या नहीं करना है ।
–पाक़ कमाई और पति–पत्नि के बीच आध्यात्मिक संबंध होना आवश्यक है ।

मालिक ने यह भी कहा कि अभ्यासियों को जाति/गोत्र के नाम हटा देने चाहियें, जिसे कानूनन घोषित करवा के उन्हें सूचित करें। बाबूजी महाराज ने स्वयं भी एक समय पर अपना उपनाम हटा दिया था। मालिक दोपहर मे सड़क–मार्ग द्वारा दिल्ली के लिये रवाना हो गये ।

प्रकाशन

नये विमोचन

हबल बबल

यह इस वर्ष का विशिष्ट विमोचन है । इसमें मलिक के द्वारा "ही, द हुक्का एंड आई" के अनुक्रम में दी गई वार्ताएं हैं ।

मालिक ने कहा, "मैं अपने सभी अभ्यासियों से तकाज़ा करता हूँ कि प्रकृति के आह्वान को सुनें, प्रकृति जो हमारा इंतज़ार कर रही है, वहाँ जहाँ कुछ भी नही है कुछ देखने के लिये नही, कुछ संजोने के लिये नही, कुछ चाहने के लिये नही, कुछ प्राप्त करने के लिये नही और सबसे ज़्यादा कुछ खोने के लिये नही और जब तक हम उस आह्वान को नही सुनते, दाढ़ी केवल एक दाढ़ी है, हुक्का केवल एक हुक्का है और धुआँ केवल धुआँ । लेकिन हमारे लिये यह हबल बबल होगा।"

5 डी वी डी की प्रतिलिपि के साथ वार्ताओं की एक पुस्तक, एक सुंदर सी पेकिंग में उपलब्ध है ।

डी वी डी सेट जुलाई 2008

डी वी डी सेट जुलाई 2008 में 2005 से 2007 तक व्राड्ज़–डेनमार्क, चेन्नई, बेंगलूर और तिरुपुर में मालिक द्वारा दी गई वार्ताओं का संग्रह है।

हिन्दी रिलीज़

मालिक द्वारा दी गई वार्ताओं की दो आडिओ सी डी को लखनऊ समारोह के दौरान जारी किया गया । मालिक द्वारा हिन्दी में दी गई वार्ताओं का संकलन–भाग 1, में मालिक द्वारा 1985 से 1996 के दौरान दी गई 14 वार्ताएं हैं । "प्रेम ही ईश्वर है" वीडिओ सी डी में गाज़ियाबाद, कोटा, बहज और इंदौर में दी गई वार्ताएं हैं ।

मास्टर्ज़ चॉयस

मास्टर्ज़ चॉयस सी डी में हमारे अभ्यासी भाईयों व बहनों द्वारा प्रस्तुत किये गये गीतों का संग्रह है । इस एलबम में गीतों की दो सी डी हैं ।

हार्ट स्पीक 2007

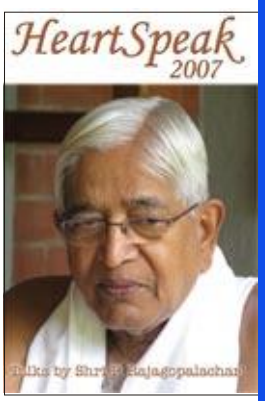

यह मालिक द्वारा 2007 में देश और विदेशों में दी गई वार्ताओं का सम्पूर्ण संकलन है। इसमें वर्ष 2006 और 2007 में मालिक की अभ्यासियों के साथ अनौपचारिक बातचीत भी सम्मिलित की गई है ।

एस.आर.सी.एम

एकोस इंडिया

सितम्बर २००८ | केवल वैयक्तिक परिचालन के लिये | वोल्यूम–१ अंक–५

उत्तराखंड: वी बी एस ई के लिये शिक्षको को प्रशिक्षण

देहरादून आश्रम में 28–29 जून को आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में उत्तराखंड से 70 और यू. पी. से 9 अभ्यासियों ने हिस्सा लिया। उत्तराखंड के ज़ोनल प्रभारी भाई एम. एल. मित्तल ने सब का स्वागत किया। बहन नीरा रघुवंशी ने वी बी एस ई के बारे में बतलाया तथा एस एम आर टी आई द्वारा जारी की गई वी बी एस ई पर आधारित टीचर्ज़ गाइड के बारे में भी अवगत करवाया।

देहरादून केन्द्र के भाई आर. एस. चौहान ने कहा कि राज्य सरकार ने स्कूलों में मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान करने की अनुमति दे दी है इसलिये अभ्यासियों को शिक्षको के तौर पर प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है।

बहन चंद्रकांता और बहन प्रीति ने मापांक, कहानियों, उदाहरणों के माध्यम से बतलाया कि वी बी एस ई को कक्षा में कैसे पढ़ाया जा सकता है। भाई जी. डी. सरीन और भाई रमेश डालाकोटि भी अध्यापक वर्ग का हिस्सा थे।

चाय के बाद सामूहिक गतिविधियों का आरम्भ हुआ। इसमें चार समूह बनाये गये।

समूह – 1 में वी बी एस ई को कक्षा में पढ़ाने के इच्छुक वॉलंटियरज़ थे।
समूह – 2 में वो वॉलंटियरज़ थे जिनको वी बी एस ई के बारे में व्यक्तिगत तौर पर अध्यापकों को बताना था।
समूह – 3 के वॉलंटियरज़ को अध्यापकों के समूह और अभ्यासियों को वी बी एस ई के लिये प्रशिक्षित करना था।
समूह – 4 में वो वॉलंटियरज़ थे जिनको वी बी एस ई के बारे में संस्थाओं के प्रमुख से बात करना था।

इन समूहों के प्रत्येक अभ्यासी को जजों की टीम व बाकियों के समक्ष कुछ क्षणों के लिये अपनी भूमिका प्रस्तुत करने का अवसर दिया गया।

कार्यक्रम का समापन करते हुए उत्तराखंड के ज़ोनल प्रभारी भाई एम. एल. मित्तल ने शिक्षक वर्ग के सदस्यों और कार्यक्रम में हिस्सा लेने वालों को धन्यवाद दिया और यह कामना की कि जैसा मालिक चाहते हैं हम सभी वैसे ही वी बी एस ई के कार्य को आगे बढ़ाएंगे।

निबंध लेखन

श्री राम चंद्र मिशन एक एन जी ओ (NGO) है जो दिसम्बर 2005 से संयुक्त राष्ट्र संस्था डिपार्टमेंट ऑफ़ पब्लिक इन्फ़रमेशन के साथ जुड़ी हुई है। हमारे उनके साथ जुड़ने से मिशन, संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्यों और गतिविधियों तथा विश्व संबंधी विषयों के बारे में लोगों में जागरूकता पैदा करने के लिये प्रतिबद्ध हो जाता है।

संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस, जो कि 12 अगस्त को था, को मनाने के लिये SRCM के तत्त्वाधान में देश भर के स्कूलों और कॉलेजों में अखिल भारतीय निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। वरिष्ठ वर्ग (17–24 वर्ष) के लिये निबंध का विषय था– "आत्म–सम्मान और आत्म–विश्वास चरित्र का निर्माण कर सकते हैं " और कनिष्ठ वर्ग के लिये विषय था– "सत्य साहस है"।

निबंध लेखन के लिये अंतिम तिथि 31 अगस्त थी।

गुलबर्गा, कर्नाटक

अभ्यासियों के बच्चों के लिये 6 जुलाई 2008 को गुलबर्गा आश्रम में मालिक की कॉटेज के सामने लॉन में निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका विषय था – बच्चों ने, अभिभावकों और रिश्तेदारों के मिशन से जुड़ने के बाद उनमें क्या परिवर्तन महसूस किये। अलग अलग आयु वर्ग के 11 बच्चों ने इसमें हिस्सा लिया। अब एक रेखाचित्र प्रतियोगिता (ड्रॉइंग) का नियोजन किया जा रहा है।

नंजनगुड़, कर्नाटक

मैसूर के पास, मंदिरों के शहर नंजनगुड़ में अभ्यासियों ने स्थानीय स्कूलों में जा कर बच्चों को अखिल भारतीय निबंध लेखन प्रतियोगिता में भाग लेने के लिये प्रोत्साहित किया जिससे 13 जुलाई को आयोजित प्रतियोगिता में 13 स्कूलों के 105 विद्यार्थियों ने उसमें हिस्सा लिया। स्थानीय अभ्यासी जोकि अध्यापकगण भी है, ने उन परविष्टियों को जांचा। विद्यार्थियों को उनके स्कूलों में इनाम के तौर पर मिशन का साहित्य प्रदान किया गया।

एस.आर.सी.एम

एकोस इंडिया

सितम्बर २००८ केवल वैयक्तिक परिचालन के लिये वोल्यूम–१ अंक–५

मैं अपने केन्द्र के विकास में कैसे योगदान कर सकता/सकती हूँ।

10 अगस्त, 2008 को यह प्रश्न इन्दौर केन्द्र के अभ्यसियों के सामने रखा गया। हाल ही में, लखनऊ उत्सव में उनकी उपस्थिति के कारण वे (125) काफ़ी उत्साहित थे और बहुत ही उत्साह से उन्होंने इस विषय पर चर्चा की।

विकास का क्या अर्थ है?

– यह संख्याओं से ज़्यादा अभ्यासी के व्यक्तिगत विकास और उसका बदलाव है।

–स्वयंसेवा (वालंटियर वर्क) के द्धारा हमारा विकास होता है।

–जैसे हम विकसित होते हैं 'केन्द्र' का विचार स्थानीय से विश्व तक विस्तृत हो जाता है।

इसका मुख्य सारांश था कि हम सहयोग करके सबसे ज्यादा योगदान कर सकते हैं। उनका काम जो हमारे ऊपर है उसमें हम अपनी मानवीय इच्छा द्धारा किसी प्रकार का अवरोध पैदा न करें। बिना किसी शर्त के उनका आज्ञापालन करें जो हमारी भलाई के लिये है।

नेतृत्व की कला पर सृजनात्मक कार्यशाला

22 जून 2008 को प्रतिबद्ध स्वयंसेवकों के लिये वडोदरा आश्रम में एक नवरूपित कार्यशाला का आयोजन हुआ। व्यवसायिक प्रशिक्षक (प्रोफ़ेश्नल ट्रेनर) ने, 25 अभ्यासी जिसमें 3 प्रशिक्षक भी थे, को प्रशिक्षित किया।

प्रभावी विचार–विनियम, सृजनात्मक रूप से समस्या का समाधान, काम और लोगों में रुचि के साथ, नेतृत्व का ज्ञान और परिस्थितियों के अनुसार नेतृत्व करने की कलाओं के बारे में सम्बोधित किया। सहभागियों को सांसारिक समस्याओं को सुलझाते समय सृजनात्मक द्रग से सोचने, उसके बारे मे अपने अनुभवों का आदान–प्रदान करने तथा सीखे हुए सबक को आत्मसात करने के लिये कहा गया। सभी सहभागियों ने स्थितियों को, मिशन के बड़े समारोहों सहित अन्य कई गतिविधियों मे स्वंयसेवक का कार्य करते समय ज़रूरी नेतृत्व के गुणों से जोडने का प्रयास किया।

अहमदाबाद में युवाओं के लिये उच्चस्तरीय प्रशिक्षण

22 जून 2008 को ज़ोनल स्तर पर आयोजित एक–दिवसीय कार्यक्रम में गुजरात के 45 युवा अभ्यासियों ने भाग लिया इसका शीर्षक था– "उत्साह से फ़र्क पडता है"। सहभागियों को 5 टीमों में बाँटा गया और प्रशिक्षक के नेतृत्व में नाव्य, सामूहिक वार्ताएं, उठाना और बोलना (पिक एन्ड स्पीक), प्रश्नोत्तर आदि सत्र हुए। सांस्कृतिक कार्यक्रम व रात के खाने के साथ इस कार्यक्रम का समापन हुआ।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि कार्यक्रम के विषय के अनुरूप, ह्राल दिन–भर अभिरूचि और उत्साह से भरा रहा जोकि इस कार्यक्रम का विषय भी था। कार्यक्रम का संचालन कर रहे बडे भी इसका अपवाद नहीं थे।

नेवली में आध्यात्मिक सभा, तमिलनाडु

नेवली अपनी लिग्नाइट (भुरा कोयला) की खानों के लिये जाना जाता हैं। 29 जून 2008 को मिशन के केन्द्र ने अभ्यासियों के लिये एक–दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया। स्थानीय व कड्डलूर, पाँडिचेरी, विल्लुपुरम, वृद्धाचलम, पनरूति के आस–पास के केन्द्रों से 140 अभ्यासी व 15 बच्चों ने भाग लिया।

अभ्यासियों ने रूचिपूर्वक प्रेम, सहनशक्ति, प्रतिबद्धता और भाईचारे जैसे विषयों पर लघु वार्तायें प्रस्तुत करने मे अपना योगदान दिया। जिसके बाद तीन एम पर एक पहेली का आयोजन किया गया। अभ्यासियों के द्धारा प्रस्तुत एक नाटक के अलावा एक अभ्यासी दम्पति से उनके पारिवारिक जीवन पर सहज मार्ग अभ्यास के प्रभाव पर एक साक्षात्कार, अपने अनुभव बाटँने का एक प्रभावी माध्यम साबित हुआ। इस सब के साथ, दो अभ्यासियों द्धारा सत्संग का अर्थ, इस पर चर्चा व स्पष्टीकरण प्रस्तुत किया गया।

एस.आर.सी.एम

एकोस इंडिया

सितम्बर २००८ केवल वैयक्तिक परिचालन के लिये वोल्यूम–१ अंक–५

प्रशिक्षण कार्यक्रम

धनबाद

28 और 29 जून को कोलकता, रानीगंज, धनबाद, सिन्दरी, बोकारों, और गिर्दिह से 80 अभ्यासियों ने दो दिन के कार्यक्रम में भाग लिया। दूसरे केन्द्र के अभ्यासी कार्यकर्ताओं और प्रशिक्षकों ने भाई वाई. पी. के मूर्ति, धनबाद केन्द्र के प्रभारी को काफ़ी सहयोग दिया।

पहले दिन के कार्यक्रम के मुख्य अंश सफ़ाई, ध्यान व प्रार्थना पर एक प्रस्तुति थी। एक ओपन हाउस का आयोजन हुआ, जिसका विषय था "सहज मार्ग पद्दति, जीने का तरीका"। प्रशिक्षकों की वार्ता के बाद प्रशिक्षकों और मेहमानों के बीच एक रोचक अनौपचारिक वार्ता का आदान–प्रदान हुआ।

दूसरे दिन एक प्रश्नोत्तर कार्यक्रम के बाद एक सामूहिक वार्ता "सहज मार्ग मे आने के पहले और बाद" का आयोजन हुआ। सामूहिक वार्ता बहुत प्रभावशाली और उद्देश्यपूर्ण थी क्योंकि वार्ता सीधे अभ्यासियों के हृदय से आ रही थी। उनके अनुभव चमत्कार से परिपूर्ण और इस बात का शंकारहित उद्गार थे कि जिस दिन से हम सहज मार्ग मे आते हैं, मालिक हमारे साथ हर परिस्थिति मे रहते हैं।

तिनसुकिया

तिनसुकिया और डिब्रुगढ़, सिबसागर, नज़ीरा, डिग्बोई, दुमदुमा, नाहरकटिया और दुलियाजान, अरुणाचल के आसपास के केन्द्रों से 200 से अधिक अभ्यासियों ने, अभ्यासी प्रशिक्षण में 29 तारीख को तिनसुकिया आश्रम में भाग लिया।

मालिक के दर्द, नैतिकता, और साधना पर प्रस्तुतियां दी गई, उसके बाद प्रश्नोत्तर हुए। भाई अशोकसेंन गुप्ता ने कार्यक्रम का सन्चालन करते हुए मालिक की शिक्षाओं से उद्दरित किया कि 'हमें जो कुछ भी मिलता है, हमें दूसरो के साथ बाटंना चाहिये'। उन्होनें मालिक की कुछ दिन पूर्व की गोवा वार्ता के बारे में बताते हुए कहा कि हर अभ्यासी यदि एक अभ्यासी प्रति वर्ष लाता है, तो वह केन्द्र आसानी से बढ़ेगा।

फ़ोटोज़ के. जरिये इस बात पर प्रकाश डाला गया कि बाबूजी तिनसुकिया कई बार आये और इस स्थान को लेकर उनका एक सपना था जोकि हम अभी तक पूरा नहीं कर पाये हैं। लेकिन यदि हम यह काम यहीं और अभी करने का बीड़ा उठा लें तो मालिक की कृपा से उनके स्वप्न को पूर्ण करना मुमकिन हो पायेगा।

गुलबर्गा

6 जुलाई को नये अभ्यासियों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन गुलबर्गा आश्रम मे किया गया। 25 अभ्यासियों ने भाग लिया। सहज मार्ग के मूलभूत सिद्दान्तो के व्याख़्यान पर जोर दिया गया। वार्ताओं के दौरान प्रश्नोत्तर भी दिये गये।

दिल्ली केन्द्र में युवाओं के लिये कार्यशाला

दिल्ली के युवा अभ्यासियों के लिये यह बड़ा ही ताजगी भरा अनुभव था, जिन्होनें 6 जुलाई को आयोजित कार्यशाला मे भाग लिया। इसका विषय था 'जो भी आप प्राप्त करना चाहते हैं वह यहाँ और अभी है'। संचालक के नेतृत्व मे सहभागियों को 8 समूहों मे बांटा गया। समानता, प्रेम, विश्वास, धैर्य, इच्छा शक्ति, यहीं और अभी, अनुशासन और समय– यह समूहों के द्वारा चर्चा के विषय थे। युवा सहभागियों ने स्वामी विवेकानन्द की महापुकार "उठो और जागो" पर अति रोचक नाटक प्रस्तुत किया।

भौतिक सभ्यता से परिपूर्ण इच्छाओं और उद्देश्यों के वशीभूत होने के आध्यात्मिक खतरों की युवाओं को चेतावनी देते हुए मालिक की वार्ता के बारे में बताया गया और निम्नलिखित बातों पर प्रकाश डाला:– बुद्दिमत्ता, अच्छे– बुरे मे भेद करने के लिये है। दिमाग को अच्छे– बुरे मे भेद व अनुशासन के लिये काम मे लेना चाहिये। प्रत्येक दिन आध्यात्मिकता को प्राथमिक्ता देते हुए उच्चतम कार्य के लिये प्रयास करना चाहिये जो जीवन को खुशी की तरफ़ ले जाये।

सिलिगुड़ी

50 अभ्यासी, जो सिलीगुड़ी और रायगंज, दार्ज़िलिंग, बिज़ोनबारी और आसपास के केन्द्रों से आये थे, सहज मार्ग अभ्यास के बारे मे उनकी शंकाओ को दूर करते हुए, उनकी समझ को और गहनता दी गई। सहज मार्ग अभ्यास पर 7 और 8 जून को ऋषि भवन, सिलिगुड़ी मे दो दिन की कार्यशाला आयोजित की गई। व्यक्तिगत सिटिंग और सत्संग के साथ–साथ दैनिक अभ्यास, सतत–स्मरण और दस उसूलों पर भी व्याख़्यान हुये। नये अभ्यासियों ने इस कार्यशाला को बहुत ही फ़ायदेमंद पाया क्योंकि इसमे उनकी कई शंकाओं तथा दुविधाओं का निवारण हुआ। काफ़ी अभ्यासियों ने महसूस किया कि ऐसी कार्यशाला समय–समय पर होती रहनी चाहिये।

एस.आर.सी.एम

एकोस इंडिया

सितम्बर २००८ केवल वैयक्तिक परिचालन के लिये वोल्यूम–१ अंक–५

ओपन हाऊस सत्र

डिब्रुगढ़

28 जून 2008 को डिब्रुगढ़ क्षेत्र में भाई डूंगरमल अग्रवाल द्वारा ओपन हाऊस सत्र का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 33 अतिथि उपस्थित थे। उनमें से 9 लोगों ने कार्यक्रम के तुरंत बाद सिटिंग ली और साथ ही कुछ लोगों ने तुरंत अभ्यास शुरु करने की इच्छा ज़ाहिर की। इस कार्यक्रम का संचालन गुवाहाटी के भाई असोक सेनगुप्ता ने किया।

नंदयाल, आंध्र प्रदेश

4 से 8 जून को म्युनिसिपल हाई स्कूल, नंदयाल में 150 अध्यापकों के लिये 3 बैचेज़ में योग और ध्यान पर एक अनुस्थापन कार्यक्रम आयोजित किया गया। एक संतुलित और तनावरहित जीवन कैसे बिताया जाये – इस पर विस्तार से चर्चा की गई। 26 जून को नंदयाल में पूलोजी राव कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन में हमारे अभ्यासियों ने कार्यक्रम का संचालन किया जिसका विषय था – सहज मार्ग ध्यान पद्धति, अध्यापन के व्यवसाय में कैसे लाभकारी है और विद्यार्थियों में जीवन मूल्यों को कैसे अंतर्निविष्ट किया जाये। 60 अध्यापकों ने इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

मंडमरी, आंध्र प्रदेश

कारमल हाई स्कूल के प्रबन्धको (मैनेजमेंट) के अनुग्रह पर 70 अध्यापकों के लिये कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें अभ्यासी अध्यापकों ने ध्यान की आवश्यकता और व्यक्तिगत अनुभवों को प्रस्तुत किया। मिशन की प्रार्थना को स्कूल के सूचना पट्ट पर प्रदर्शित किया गया है।

वडोदरा, गुजरात

6 जुलाई 2008 रविवार को अलकापुरी के बड़ौदा हाई स्कूल के रंगभवन में 90 अध्यापकों व अन्य मेहमानों के लिये एक ओपन हाऊस का आयोजन किया गया। वक्ताओं ने व्यक्ति के जीवन में आध्यात्मिकता की आवश्यकता और ध्यान की उपयुक्तता, सहज मार्ग साधना के प्रमुख अंग तथा मानव मन पर इसका प्रभाव और सहज मार्ग साधना के द्वारा अपने जीवन में आये व्यक्तिगत परिवर्तन को दूसरों के साथ बांटना इत्यादि विषयों पर अपने विचार व्यक्त किये।

गुलबर्गा : ग्रामीण प्रयास

6 जून 2008 को आइनोली गाँव में एक अभ्यासी के घर की छत पर 25 लोग एकत्रित हुए जिसमें सहज मार्ग पर चर्चा के उपरांत पद्धति के बारे में प्रश्नों पर विचार हुआ। इसी क्षेत्र में कनकपुरा गाँव एक अगला पडाव था जहाँ 35 मेहमानों ने एक अभ्यासी के घर पर आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया। यह दोनों सभाओं का आयोजन पूर्णतया: ग्रामीण पृष्ठभूमि में किया गया। सहज मार्ग को सीधे और स्पष्ट तरीके से प्रस्तुत किया गया जिससे कि श्रोताओं को इस दिशा में उनके द्वारा किये जा रहे अन्य प्रयासों के विषय में दोबारा सोचने के लिये प्रेरित किया जा सके।

कोडैकनल, तमिलनाडू

कोडैकनल, तमिलनाडू का एक पर्वतीय स्थान है तथा मदुरई का एक उप–केन्द्र भी है। मदुरई के प्रशिक्षक इस क्षेत्र में मिशन का विकास करने के लिये प्रयास कर रहे हैं। 12 जुलाई 2008 को भवन के गांधी विद्याश्रम स्कूल में 25 शिक्षक सदस्यों के लिये सहज मार्ग पर प्रस्तुतिकरण दिया गया। वहाँ के प्रधानाध्यापक ने आश्वासन दिलाया कि शिक्षको में इच्छुक सदस्यों को ध्यान शुरु करने में वे मद्द करेंगे। स्थानीय प्रशिक्षक भाई रामानाथन और अभ्यासी भाई चंद्रप्रसाद ने इस कार्यक्रम का आयोजन किया।

श्री संकरा विद्यालय मैट्रिकुलेशन हायर सेकैंडरी स्कूल, कोडैकनल ने 8 अगस्त 2008 को 20 शिक्षकों के लिये ओपन हाउस आयोजित करने का हमारे मिशन को आमंत्रण दिया। सहज मार्ग पर विस्तृत प्रस्तुतिकरण के उपरांत प्रधानाध्यापक सहित 13 शिक्षक वर्ग के सदस्यों ने सिटिंग लेने की इच्छा ज़ाहिर की।

सिलिगुड़ी, प. बंगाल

8 जून 2008 को जलपाइगुड़ी ज़िला परिषद रंगभवन में सिलिगुड़ी और जलपाइगुड़ी के अभ्यासियों के द्वारा ओपन हाउस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत स्थानीय स्कूल के नर्सरी कक्षा के बच्चों के गायन और नृत्य से हुई। प्रशिक्षको की वार्ताओं के अतिरिक्त एक पावर पांयट का भी प्रयोग किया गया। 35 अतिथियों ने इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया और पद्धति के बारे में जानकारी ली।

एस.आर.सी.एम

एकोस इंडिया

सितम्बर २००८ केवल वैयक्तिक परिचालन के लिये वोल्यूम–१ अंक–५

प्रकाश के केन्द्र

अहमदाबाद आश्रम

अहमदाबाद–गांधीनगर हाईवे से गुज़रते समय नव–निर्मित अहमदाबाद आश्रम को नज़रंदाज़ नहीं किया जा सकता। इस आश्रम का उद्घाटन पूज्य मालिक द्वारा किया गया था जब वे पिछली बार यहाँ पधारे थे।

षट्कोण आकार का ध्यान–कक्ष, भारत में मिशन के समस्त ध्यान–कक्षों से भिन्न है। यह आधुनिक, प्रभावशाली और कार्य अनुकूलतम है।

यह आश्रम अहमदाबाद शहर से 25 कि. मी. दूर 4.75 एकड़ की ज़मीन पर बना है। इस आश्रम परिसर में 5 मुख्य इमारतें हैं ; ध्यान–कक्ष, मालिक की कॉटेज, डॉरमिटरीज़, अपार्टमेंट ब्लॉक, रसोई घर तथा दफ़्तर।

ध्यान–कक्ष

ध्यान–कक्ष एक विशेष स्वच्छन्द ढाँचा है जिसकी छत (अतिश्योक्तिपूर्ण परवलय/ हाइपरबौलिक पैराबोलॉयड) कंकरीट पर्दे की छत है। यह एक षट्कोण आकार का स्तम्भ रहित बड़ा स्थान है जहाँ से मालिक को बिना किसी विघ्न के देखा जा सकता है, जब कभी भी वे शारीरिक रूप से वहाँ विद्यमान होते हैं।

यह आकार कक्ष के अंदर के तापमान को भीष्ण गर्मी में भी कम रखता है। यह डिज़ाइन हवा के प्राकृतिक प्रवाह को एक तरफ़ से ऊपर की ओर ले जाने में सहायक होता है।

ध्यान–कक्ष में 2000 अभ्यासी एक साथ बैठ सकते हैं। इस कक्ष के दो तरफ़ बाड़े (टेंट) बनाने का प्रावधान है जिसमें आवश्यकता पड़ने पर 500 अभ्यासी और बैठ सकते हैं।

मालिक की कॉटेज

मालिक की कॉटेज का नक्शा सुंदर और परंपरागत है जिसमें बीच में आंगन है और चारों ओर मालिक के विश्राम गृह सहित दफ़्तर, बैठक, रसोई घर तथा एक अतिथि– गृह है।

कॉटेज की छत मे एक अलग तरह की ढलान है जो अंदर से लकड़ी और बाहर से मेंगलूर टाइलों से बनाई गयी है।

डॉरमिट्रीज़

दो मंज़िला डॉरमिट्रीज़ 6 बराबर आकार की इकाईयां हैं। जिसमें 750 अभ्यासी आराम से रह सकते हैं।

डॉरमिट्री के एक सिरे पर अभ्यासियों एवं आस–पास के ग्रामीण लोगों के लिये एक छोटा सा क्लीनिक है जिसे अभ्यासी डाक्टर चलाते हैं।

6 में से एक इकाई दृश्य–श्रव्य साधनों से सुसज्जित है जिसे प्रशिक्षण कार्यों और सेमिनारों के लिये तैयार किया गया है।

रसोई काफ़ी खुली है जिसमें आवश्यकतानुसार सामान रखने की जगह है तथा अन्य उपयोग जैसे बर्तन धोना आदि आसानी से किया जा सकता है। रसोई घर के ऊपर आश्रम मैनेजर का आवास तथा एक सुसज्जित कार्यालय है।

एक अपार्टमेंट ब्लॉक जोकि एल् आकार का दो मंज़िल का ढांचा है उसमें 6 दो और 9 एकल बेडरूम के अपार्टमेंट हैं।

भावी योजनांए

आश्रम में भविष्य में एक भोजन कक्ष , बच्चों के खेलने की जगह, प्रभारी और कर्मचारियों के लिये चार स्टाफ़ क्वाटर, वर्षा के पानी का संग्रहण, बगीचे और पेड़ लगाने और एक पुस्तकालय बनाने की योजना है।

अहमदाबाद आश्रम यकीनन भारत में मिशन के बाकी आश्रमों की तरह ही एक रत्न है। मालिक की कृपा से यह आश्रम मानवता के लिये एक मज़बूत आध्यात्मिक स्रोत बनेगा।

To subscribe to this Newsletter please visit http://www.srcm.org/centers/as/in/newsletter/index.jsp
For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org

© 2008 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved.
"Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.
This message may be edited for content and is intended exclusively for the members of SRCM.